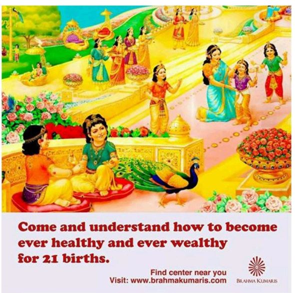


17-10-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

**“मीठेबच्चे - जैसे बाप भविष्य 21 जन्मों के लिए सुख देते हैं वैसे आप बच्चे भी बाप के मददगार बनो, प्रीत-बुद्धि बनो, दु:ख देने का कभी ख्याल भी न आये"**

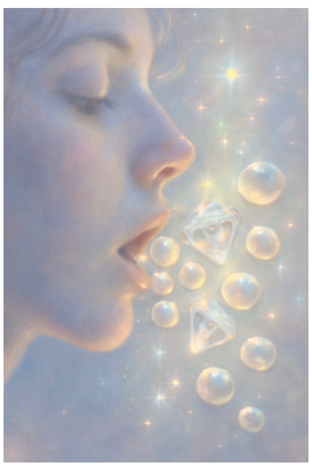

**प्रश्नः- तुम रूप-बसन्त बच्चों का कर्तव्य क्या है? तुम्हें बाप की कौन-सी शिक्षायें मिली हुई हैं?**

**उत्तर:-** तुम रूप-बसन्त बच्चों का कर्तव्य है मुख से सदैव रत्न निकालना, तुम्हारे मुख से कभी पत्थर नहीं निकलने चाहिए। सर्व बच्चों प्रति बाप की शिक्षा है कि बच्चे 1. आपस में कभी एक-दो को तंग नहीं करना, गुस्सा नहीं करना, यह आसुरी मनुष्यों का काम है। 2. मन्सा में भी किसी को दु:ख देने का ख्याल न आये। 3. निंदा-स्तुति, मान-अपमान सब कुछ सहन करना। अगर कोई कुछ बोलता है तो शान्त रहना। हाथ में लॉ नहीं उठाना।

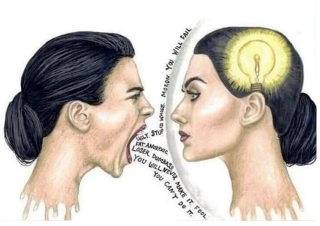


**गीत:-तू प्यार का सागर है.....** Click

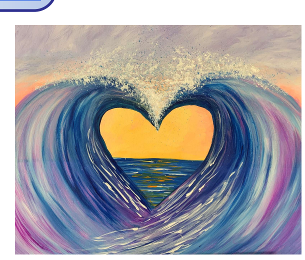

तू प्यार का सागर है
तेरी इक बूँद के प्यासे हम
लौटा जो दिया तुमने, चले जायेंगे जहाँ से हम
तू प्यार का सागर है ...

घायल मन का, पागल पंछी उड़ने को बेक़रार
पंख हैं कोमल, आँख है धुँधली, जाना है सागर पार
जाना है सागर पार
अब तू हि इसे समझा, राह भूले थे कहान से हम
तू प्यार का सागर है ...

इधर झूमती गाये ज़िंदगी, उधर है मौत खड़ी
कोई क्या जाने कहाँ है सीमा, उलझन आन पड़ी
उलझन आन पड़ी
कानों में ज़रा कह दे, कि आये कौन दिशा से हम
तू प्यार का सागर है ...

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

**ओम् शान्ति।** ज्ञान और अज्ञान। तुम बच्चों में अभी ज्ञान है - भक्त लोग महिमा किसकी करते हैं और तुम बच्चे जो यहाँ बैठेहो तुम किसकी महिमा सुनते हो? रात-दिन का फ़र्क है। वो तो ऐसे ही सिर्फ महिमा गाते रहते हैं। इतना प्यार नहीं है क्योंकि पहचान नहीं। तुमको बाप ने पहचान दी है मैं प्यार का सागर हूँ और तुमको प्यार का सागर बना रहा हूँ। बाप प्यार का सागर कितना सबको प्यारा लगता है। वहाँ भी सब एक-दो को प्यार करते हैं। यह तुम यहाँ सीखते हो। किसके साथ भी विरोध नहीं होना चाहिए, जिसको बाबा लून-पानी कहते हैं। अन्दर में किसके लिए नफ़रत नहीं होनी चाहिए। नफ़रत करने वाले कलियुगी नर्कवासी हैं। जानते हो हम सब भाई-बहन हैं। शान्तिधाम में हैं तो भाई-भाई हैं। यहाँ जब कर्मक्षेत्र पर पार्ट बजाते हैं, तो बहन-भाई हैं। ईश्वरीय सन्तान हैं। ईश्वर की महिमा है वो ज्ञान का सागर, प्रेम का सागर है, यानी सबको सुख देते हैं। तुम सब दिल से पूछो - जैसे बाप भविष्य 21 जन्मों के लिए सुख देते हैं वैसे हम भी वह कार्य करते हैं?

कितना मीठा, कितना प्यारा शिव भोला भगवान...
हमने देखा, हमने पाया शिव भोला भगवान...

पुछो अपने आप से...

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

Actions:-

अगर बाप के मददगार नहीं बनते, प्यार नहीं करते, एक-दो से प्रीत नहीं है, विपरीत बुद्धि होकर रहते हैं तो

Result/Reaction:-

विनशन्ती हो जाते हैं। विप्रीत बुद्धि होना असुरों का काम है। अपने को ईश्वरीय सम्प्रदाय कहलाकर फिर एक-दो को दु:ख देना उनको असुर कहा जाता है।

Definition of

तुम बच्चों को किसी को भी दु:ख नहीं देना है। तुम हो ही दु:ख हर्ता, सुख कर्ता बाप के बच्चे। तो दु:ख देने का ख्याल भी तुमको नहीं आना चाहिए। वह तो हैं ही आसुरी सम्प्रदाय, न कि ईश्वरीय सम्प्रदाय क्योंकि देह-अभिमानी हैं। वह कभी याद की यात्रा में रह न सकें।

ये पक्का समझ लो..

याद की यात्रा बिगर कल्याण होना नहीं है। वर्सा देने वाले बाप को तो जरूर याद करना है तो विकर्म विनाश होंगे। आधाकल्प तो एक-दो को दु:ख देते आये हो। एक-दो में लड़ते तंग करते रहते हैं, वह आसुरी सम्प्रदाय में गिने जाते हैं। भल पुरुषार्थी हैं तो भी कब तक दु:ख देते रहेंगे इसलिए बाबा कहते हैं अपना चार्ट रखो। चार्ट रखने से मालूम पड़ेगा - हमारा रजिस्टर सुधरता जाता है या वही आसुरी चलन है? बाबा सदैव कहते हैं कभी किसको दु:ख

पुछो अपने आप से...

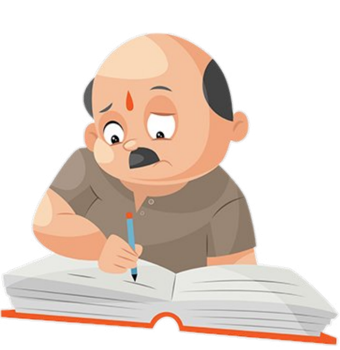

समः शत्रौ च मित्रे च तथा मानापमानयोः।
शीतोष्णसुखदुःखेषु समः सङ्गविवर्जितः॥
जो शत्रु-मित्रमें और मान-अपमानमें सम है तथा सरदी, गरमी और सुख-दुःखादि द्वन्द्वोंमें सम है और आसक्तिसे रहित है॥ १८॥ Adhyay-12
तुल्यनिन्दास्तुतिर्मौनी सन्तुष्टो येन केनचित्।
अनिकेतः स्थिरमतिर्भक्तिमान्मे प्रियो नरः॥
जो निन्दा-स्तुतिको समान समझनेवाला, मननशील और जिस किसी प्रकारसे भी शरीरका निर्वाह होनेमें सदा ही सन्तुष्ट है और रहनेके स्थानमें ममता और आसक्तिसे रहित है—वह स्थिरबुद्धि भक्तिमान् पुरुष मुझको प्रिय है॥ १९॥

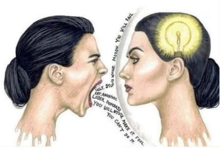

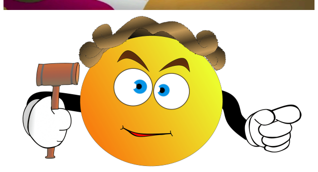

न दो। निंदा-स्तुति, मान-अपमान, ठण्डी-गर्मी सब सहन करना है। कोई ने कुछ कहा तो शान्त रहना चाहिए। ऐसे नहीं कि उनके लिए दो वचन और कह देना है। कोई किसको दु:ख देते हैं तो उनको बाप समझायेंगे ना। बच्चे, बच्चे को कह नहीं सकते। अपने हाथ में लॉ नहीं लेना है। कुछ भी बात है तो बाप के पास आना है। गवर्मेन्ट में भी कायदा है - कोई एक-दो को घूँसा नहीं मार सकते। कम्पलेन कर सकते हैं। लॉ उठाना गवर्मेन्ट का काम है। तुम भी गवर्मेन्ट के पास आओ। हाथ में लॉ नहीं लो। यह तो है ही अपना घर इसलिए बाबा कहते हैं रोज़ कचहरी करो। यह भी समझते नहीं हैं - शिवबाबा ऑर्डर करते हैं। बाबा ने कहा है हमेशा समझो शिवबाबा सुनाते हैं। ऐसे मत समझो ब्रह्मा सुनाते हैं। हमेशा शिवबाबा ही समझो तो उनकी याद रहेगी। यह शिवबाबा ने रथ लिया है, तुमको ज्ञान सुनाने के लिए। सतोप्रधान बनने का रास्ता बाप समझा रहे हैं। वह है गुप्त। तुम हो प्रत्यक्ष। जो भी डायरेक्शन निकलते हैं, समझो शिवबाबा के हैं तो तुम सेफ रहेंगे। तुम बाबा-बाबा

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

Very Subtle Point to understand

ज्ञानी को ज्ञानी मिलै,
रस की लूटम लूट,
ज्ञानी अज्ञानी मिलै,
होबै माथा कूट !

शिव को ही कहते हो। वर्सा भी उनसे मिलता है। उनके साथ कितना रिगार्ड, रॉयल्टी से चलना चाहिए। तुम कहते हो ना - बाबा हम तो लक्ष्मी-नारायण बनेंगे। फिर सेकेण्ड,थर्ड बनें, सूर्यवंशी नहीं बनें तो चन्द्रवंशी बनें। ऐसे तो नहीं हम भल दास-दासी बनें। प्रजा बनना तो अच्छा नहीं। तुमको तो यहाँ दैवीगुण ही धारण करने हैं। आसुरी चलन तो नहीं होनी चाहिए। निश्चय नहीं है तो फिर बैठे-बैठेयह कह देते, इनमें शिवबाबा आते हैं - हम तो नहीं समझते। माया का भूत आने से आपस में ऐसे कह देते। आपस में आसुरी स्वभाव वाले मिलते हैं तो फिर ऐसे बोलने लग पड़ते हैं, आसुरी बातें ही मुख से निकलती हैं। बाप कहते हैं तुम आत्मा रूप-बसन्त बनते हो। तुम्हारे मुख से रत्न ही निकलने चाहिए। अगर पत्थर निकलते हैं तो गोया आसुरी बुद्धि ठहरे।

गीत भी बच्चों ने सुना। बच्चे कहते हैं - बाबा प्यार

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

ये पक्का समझ लो..

Click ← must watch

Simple Logic

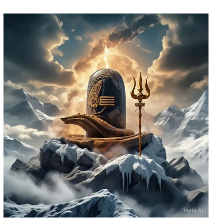

का सागर, सुख का सागर है। शिवबाबा की ही महिमा है। बाप कहते हैं तुम अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। इसमें बहुत अच्छे-अच्छे बच्चे फेल होते हैं। देही-अभिमानी स्थिति में ठहर नहीं सकते। देही-अभिमानी बनेंगे तब ही इतना ऊंच पद पायेंगे। कई बच्चे फालतू बातों में बहुत टाइम वेस्ट करते हैं। ज्ञान की बात ही ध्यान में नहीं आती। यह भी गायन है घर की गंगा का मान नहीं रखते। घर की चीज़ का इतना मान नहीं रखते हैं। जबकि कृष्ण आदि का चित्र घर में भी है फिर श्रीनाथ द्वारे आदि इतना दूर-दूर क्यों जाते हो। शिव के मन्दिरों में भी है तो पत्थर का ही लिंग। पहाड़ों से पत्थर निकलते हैं, वह घिस-घिस कर लिंग बन जाते हैं, उनमें कोई-कोई पत्थर में सोना भी लगा हुआ होता है। कहा जाता है सोने का कैलाश पर्वत। सोना पहाड़ों से निकलता है ना। तो थोड़ा-थोड़ा सोना लगे हुए पत्थर भी होते हैं जो फिर बहुत अच्छे-अच्छे गोल हो जाते हैं, वह बेचते हैं। मारबल का भी खास बनाते हैं। अब भक्ति मार्ग वालों को कहो कि तुम बाहर में इतना भटकते क्यों

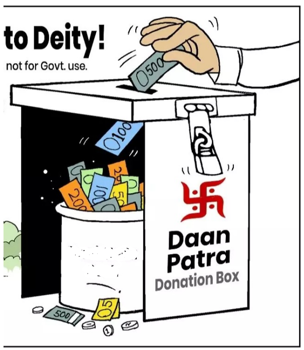


हो तो बिगड़ जायेंगे। बाप खुद कहते हैं तुम बच्चों ने बहुत पैसे बरबाद किये हैं। यह भी ड्रामा में पार्ट है जो तुमको धक्का खाना पड़ता है। यह है ही ज्ञान और भक्ति का खेल। अभी तुम बच्चों को सारी समझ मिलती है। ज्ञान है सुख का रास्ता, ज्ञान से सतयुग की राजाई मिलती है। इस समय राजा रानी तथा प्रजा सब नर्क के मालिक हैं। जब कोई मरता है तो कहते हैं स्वर्गवासी हुआ। इन बातों को अभी तुमने समझा है। अभी तुम कहते हो हम स्वर्गवासी बनने के लिए स्वर्ग की स्थापना करने वाले बाप के पास बैठेहैं। ज्ञान की बूंद मिलती है। थोड़ा भी ज्ञान सुना तो स्वर्ग में जरूर आयेंगे, बाकी है पुरुषार्थ पर। समझते हैं गंगाजल की एक लोटी भी मुख में डालने से पतित से पावन बन जाते हैं। लोटी भरकर ले जाते फिर रोज़ उनसे एक-एक बूंद पानी में मिलाए स्नान करते हैं। वह जैसे गंगा स्नान हो जायेगा। विलायत में भी गंगा जल भरकर ले जाते हैं। यह सब है भक्ति।

How lucky and Great we are...!

Mumbai: Brahma Baba sharing divine knowledge with Children.

श्री गंगा जी का तट हो,
यमुना का वंशीवट हो,
मेरा सांवरा निकट हो,
जब प्राण तन से निकले,
इतना तो करना स्वामी,
जब प्राण तन से निकले
गोविन्द नाम लेकर,
फिर प्राण तन से निकले ॥

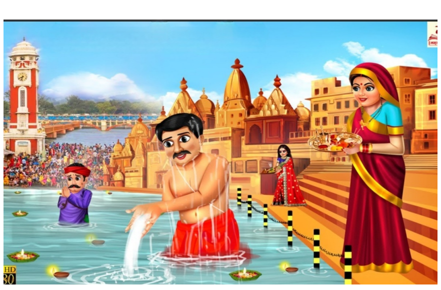

बाप बच्चों को समझाते हैं बच्चे माया बड़ा जोर से थप्पड़ लगाती है, विकर्म करा देती है इसलिए कचहरी करो, आपेही अपनी कचहरी करना अच्छा है। तुम अपने को आपेही राजतिलक देते हो तो अपनी जांच करनी है। तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना है। बाप श्रीमत देते हैं ऐसे-ऐसे करो, दैवीगुण धारण करो। जो करेंगे वह पायेंगे। तुम्हारे तो खुशी में रोमांच खड़े हो जाने चाहिए। बेहद का बाप मिला है, उनकी सर्विस में मददगार बनना है। अन्धों की लाठीबनना है। जितना जास्ती बनेंगे, उतना अपना ही कल्याण होगा। बाबा को तो घड़ी-घड़ी याद करना है। नेष्ठा में एक जगह बैठने की बात नहीं। चलते-फिरते याद करना है। ट्रेन में भी तुम सर्विस कर सकते हो। तुम कोई को भी समझा सकते हो कि ऊंच ते ऊंच कौन है? उनको याद करो। वर्सा उनसे ही मिलेगा। आत्मा को बाप से बेहद का वर्सा मिलता है। कोई दान-पुण्य करने से राजा के पास जन्म लेते हैं सो भी अल्पकाल के लिए। सदा तो राजा नहीं बन सकते। तो बाप कहते हैं यहाँ तो 21 जन्मों की गैरन्टी है। वहाँ यह

पता नहीं पड़ेगा कि हम बेहद के बाप से यह वर्सा ले आये हैं। यह ज्ञान इस समय तुमको मिलता है तो कितना अच्छी रीति पुरुषार्थ करना चाहिए। पुरुषार्थ नहीं करते हैं तो गोया अपने पांव पर कुल्हाड़ा मारते हैं। चार्ट लिखते रहो तो डर रहेगा। कोई-कोई लिखते भी हैं, बाबा देखेंगे तो क्या कहेंगे। चाल-चलन में बहुत फ़र्क रहता है। तो बाप कहते हैं ग़फलत छोड़ो। नहीं तो बहुत पछताना पड़ेगा। अपने पुरुषार्थ का फिर पिछाड़ी में साक्षात्कार जरूर होगा फिर बहुत रोना पड़ेगा। क्या कल्प-कल्प यही वर्सा मिलेगा। दास-दासी जाकर बनेंगे। आगे तो ध्यान में जाकर सुनाते थे - फलानी दासी है, यह है। फिर बाबा ने बंद कर दिया। पिछाड़ी में फिर तुम बच्चों को साक्षात्कार होंगे। साक्षात्कार बिगर सज़ा कैसे मिल सकती। कायदा ही नहीं।

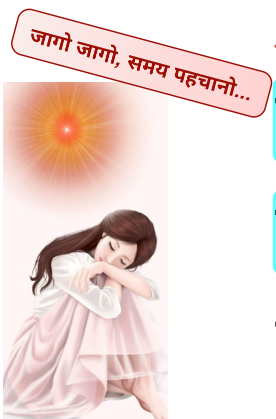

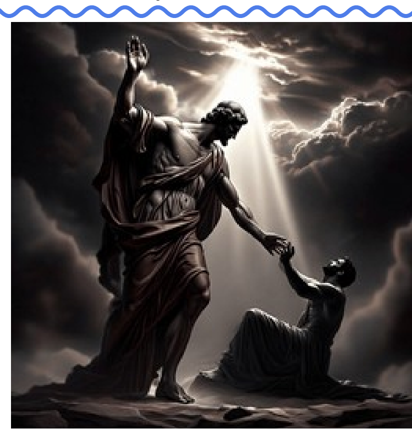

बच्चों को युक्तियां भी बहुत समझाई जाती हैं तुम

अपने पति को बोलो, बाबा कहते हैं बच्चे काम महाशत्रु है, इन पर जीत पहनो। माया जीते जगतजीत बनो। अब हम स्वर्ग के मालिक बनें या तुम्हारे कारण अपवित्र बन नर्क में जायें। बहुत प्यार, नम्रता से समझाओ। मुझे नर्क में क्यों ढकेलते हो। ऐसी बहुत बच्चियां हैं - समझाते-समझाते आखिर पति को ले आती हैं। फिर पति कहता कि यह हमारा गुरू है, इसने हमको बहुत अच्छा रास्ता बताया। बाबा के आगे चरणों में आए गिरते हैं। कभी जीत कभी हार भी होती है। तो बच्चों को बहुत-बहुत मीठा बनना है। जो सर्विस करेंगे वही प्यारे लगेंगे। भगवान बाप आये हैं बच्चों के पास, उनकी श्रीमत पर चलना पड़े। श्रीमत पर नहीं चलते हैं तो तूफान लगने से गिर पड़ते हैं। ऐसे भी हैं - वह क्या काम के रहेंगे। यह पढ़ाई कोई कॉमन नहीं है और सब सतसंगों आदि में तो है - कनरस, जिससे अल्पकाल सुख मिलता है। यह बाप द्वारा तो 21 जन्मों का सुख मिलता है। बाबा सुख-शान्ति का सागर है, हमको भी बाप से वर्सा मिलना है। सेवा करेंगे तब तो मिलेगा, इसलिए

Mind very well...

17-10-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

बैज सदा लगा रहे। हमको ऐसा सर्वगुण सम्पन्न बनना है। जांच करनी है कि हम किसको दु:ख तो नहीं देते हैं? आसुरी चलन तो नहीं चलते हैं? माया ऐसे काम कराती है, बात मत पूछो। अच्छे-अच्छे घर वाले भी बतलाते हैं, माया ने यह विकर्म करा लिया। कोई सच बताते, कोई सच नहीं बताने से सौगुणा दण्ड पा लेते। फिर वह आदत बढ़ती जायेगी। बाप को सुनायेंगे तो बाबा सावधान करेंगे। बाबा कहते हैं पाप किया है तो रजिस्टर में लिखो और बता दो तो तुम्हारे पाप आधा खलास हो जायेंगे। सुनाते नहीं, छिपा लेंगे तो फिर करते ही रहेंगे। श्राप मिल जाता है। न बतलाने से एक बार के बदले 100 बार करते रहेंगे। बाबा कितनी अच्छी राय देते हैं परन्तु कोई-कोई को ज़रा भी असर नहीं होता है। अपनी तकदीर को जैसे लात मारते रहते हैं। बहुत-बहुत नुकसान करते हैं। अन्त में सबको साक्षात्कार होगा। यह-यह बनेंगे, क्लास में ट्रांसफर होते हैं तो मार्क्स निकलती हैं ना। ट्रांसफर होने पहले रिजल्ट निकलती है। तुम भी अपने क्लास में जाते हो तो मार्क्स का पता पड़ेगा

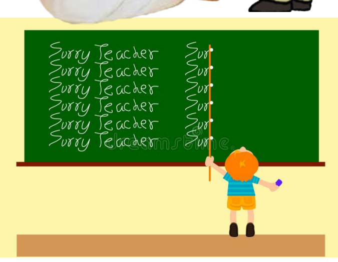

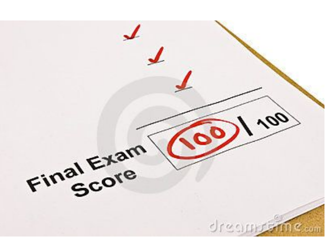


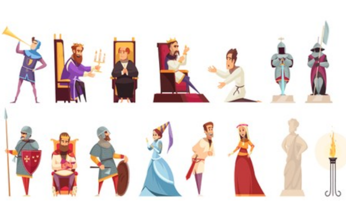

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

Attention Please..! Wake up, 89 years lapsed..

17-10-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

फिर बहुत ज़ार-ज़ार रोयेंगे। फिर क्या कर सकेंगे? रिजल्ट तो निकल गई ना। जो तकदीर में था वो ले लिया। बाप सब बच्चों को सावधान करते हैं। कर्मातीत अवस्था अभी हो न सके। कर्मातीत अवस्था हो जाए तो फिर शरीर छोड़ना पड़े, अभी कुछ न कुछ विकर्म रहे हुए हैं, हिसाब-किताब है इसलिए योग पूरा नहीं लगता है। अभी कोई भी नहीं कह सकते कि हम कर्मातीत अवस्था में हैं। नज़दीक आने से फिर बहुत निशानियाँ दिखाई पड़ेंगी। सारा मदार तुम्हारी अवस्था पर और विनाश पर है। तुम्हारी पढ़ाई पूरी होने पर होगी तो फिर देखेंगे लड़ाई सिर पर खड़ी है। अच्छा!

Point to be Noted

कबीर, पिछले पाप से, हरि चर्चा ना सुहावै। कै ऊँघै कै उठ चलै, कै औरे बात चलावै।।
तुलसी, पिछले पाप से, हरि चर्चा ना भावै। जैसे ज्वर के वेग से, भूख विदा हो जावै।।

भावार्थ:-

जैसे ज्वर यानि बुखार के कारण रोगी को भूख नहीं लगती। वैसे ही पापों के प्रभाव से व्यक्ति को परमात्मा की चर्चा में रूचि नहीं होती। या तो सत्संग में ऊँघने लगेगा या कोई अन्य चर्चा करने लगेगा। उसको श्रोता बोलने से मना करेगा तो उठकर चला जाएगा।

we can see it

जागो जागो, समय पहचानो...

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

मेरे मीठे ते मीठे बाबा...

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

17-10-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

# धारणा के लिए मुख्य सार:-

1) माया के वश होकर कोई भी आसुरी चलन नहीं चलनी है। अपनी चलन का रजिस्टर रखना है। ऐसा कोई कर्म नहीं करना है जो पश्चाताप् करना पड़े।

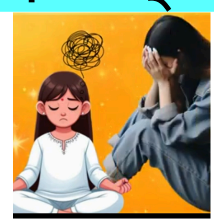

2) बहुत-बहुत प्यार और नम्रता से सेवा करनी है। मीठा बनना है। मुख से आसुरी बोल नहीं निकालने हैं। संग की बहुत-बहुत सम्भाल करनी है। श्रीमत पर चलते रहना है।

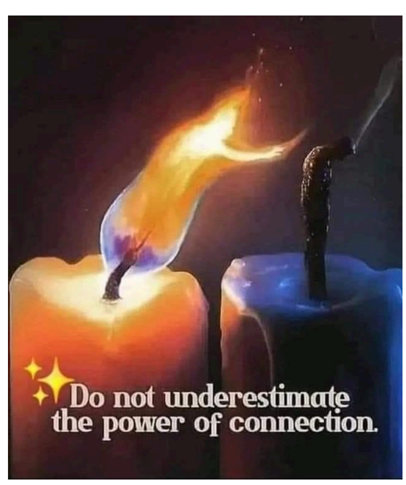


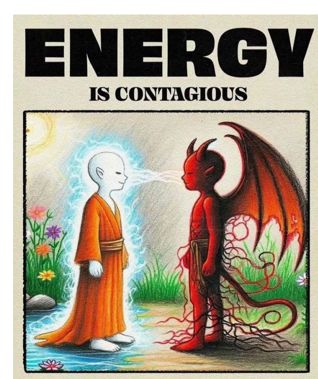

**वरदान:-** **संगठित रूप में एकरस स्थिति के अभ्यास द्वारा विजय का नगाड़ा बजाने वाले एवररेडी भव**

विश्व में विजय का नगाड़ा तब बजेगा जब सभी के सब संकल्प एक संकल्प में समा जायेंगे।

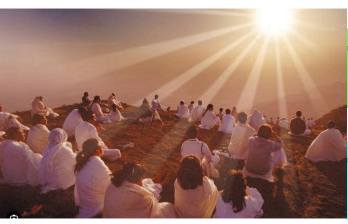

संगठित रूप में जब एक सेकण्ड में सभी एकरस स्थिति में स्थित हो जाएं तब कहेंगे एवररेडी।

एक सेकण्ड में एकमत, एकरस स्थिति और एक संकल्प में स्थित होने की ही निशानी अंगुली दिखाई है,जिस अंगुली से कलियुगी पर्वत उठ जाता,

इसलिए संगठित रूप में एकरस स्थिति बनाने का अभ्यास करो तब ही विश्व के अन्दर शक्ति सेना का नाम बाला होगा।

**स्लोगन:-** श्रेष्ठ पुरुषार्थ में थकावट आना - यह भी आलस्य की निशानी है।

Poi ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

17-10-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

## अव्यक्त इशारे -

## स्वयं और सर्व के प्रति

## मन्सा द्वारा योग की शक्तियों का प्रयोग करो

आप अपनी आत्मिक दृष्टि से अपने संकल्पों को सिद्ध कर सकते हो।

वह रिद्धि सिद्धि है अल्पकाल, लेकिन

याद की विधि से संकल्पों और कर्मों की सिद्धि है अविनाशी।

वह रिद्धि सिद्धि यूज़ करते हैं और

आप याद की विधि से संकल्पों और कर्मों की सिद्धि प्राप्त करो।

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

'ब्राह्मण जीवन और हार खाना' इसको कहेंगे नामधारी ब्राह्मण। इसमें अलबेले मत बनो। ब्राह्मण जीवन का फाउण्डेशन है - पवित्रता की शक्ति। अगर फाउण्डेशन कमजोर है तो प्राप्तियों की 21 मंजिल वाली बिल्डींग कैसे टिक सकेगी? यदि फाउण्डेशन हिल रहा है तो प्राप्ति का अनुभव सदा नहीं रह सकता अर्थात् अचल नहीं कर सकते। और वर्तमान युग को वा जन्म की महान प्राप्ति का अनुभव नहीं कर सकते। युग की, श्रेष्ठ जन्म की महिमा गाने वाले ज्ञानी-भक्त बन जायेंगे। अर्थात् समझ है लेकिन स्वयं नहीं है, इसको कहते हैं - ज्ञानी- भक्त। अगर ब्राह्मण बनकर सर्व प्राप्तियों का, सर्व शक्तियों का वरदान या वर्सा अनुभव नहीं किया तो उसको क्या कहेंगे? वंचित आत्मा वा ब्राह्मण आत्मा? इस पवित्रता के भिन्न-भिन्न रूपों को अच्छी तरह से जानों, स्वयं के प्रति कडी दृष्टि रखो। चलाओ नहीं। निमित्त बनी हुई आत्माओं को, बाप को भी चलाने की कोशिश करते हैं। यह तो होता ही है, ऐसा कौन बना है। वा कहते हैं यह अपवित्रता नहीं है, महानता है, यह तो सेवा का साधन है, प्रभावित नहीं है, सहयोग लेते हैं। मददगार है इसलिए प्रभावित हैं। बाप भूला और लगा माया का गोला। या फिर अपने को छुडाने के लिए कहते हैं - मैं नहीं करती, यह करते हैं। लेकिन बाप को भूले तो धर्मराज के रूप में ही बाप मिलेगा। बाप का सुख कभी पा नहीं सकेंगे। इसलिए छिपाओ नहीं, चलाओ नहीं। दूसरे को दोषी नहीं बनाओ। मृगतृष्णा के आकर्षण में धोखा नहीं खाओ। इस पवित्रता के फाउण्डेशन में बापदादा धर्मराज द्वारा 100 गुणा, पदमगुण दण्ड दिलाता है। इसमें रियायत कभी नहीं हो सकती। इसमें रहमदिल नहीं बन सके। क्योंकि बाप से नाता तोडा तब तो किसी के उपर प्रभावित हुए। परमात्म प्रभाव से निकल आत्माओं के प्रभाव में आना अर्थात् बाप को जाना नहीं, पहचाना नहीं। ऐसे के आगे बाप, बाप के रूप में नहीं धर्मराज के रूप में है। जहाँ पाप है वहाँ बाप नहीं। तो अलबेले नहीं बनो। इसको छोटी सी बात नहीं समझो। वह भी किसी के प्रति प्रभावित होना, कामना अर्थात् काम विकार का अंश है। बिना कामना के प्रभावित नहीं हो सकते। वह कामना भी काम विकार है।

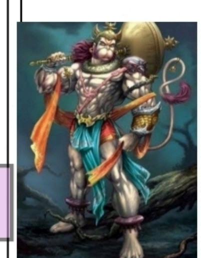
राम दुआरे तुम रखवारे
होत न आज्ञा बिनु पैसारे |

In Any Form...

महाशत्रु है। यह दो रूप में आता है। कामना या तो प्रभावित करेगी या परेशान करेगी। इसलिए जैसे नारे लगाते हो - काम विकार नर्क का द्वार। ऐसे अब अपने जीवन के प्रति यह धारणा बनाओ कि किसी भी प्रकार की अल्पकाल की कामना मृगतृष्णा के समान धोखेबाज है। कामना अर्थात् धोखा खाना। ऐसी कडी दृष्टि वाले इस काम अर्थात् कामना पर काली रूप बनो। स्नेही रूप नहीं बनो, बिचारा है, अच्छा है, थोडा-थोडा है ठीक हो जायेगा। नहीं। विकर्म के उपर विकराल रूप धारण करो। दूसरों के प्रति नहीं, अपने प्रति। (Then only) तब विकर्म विनाश कर फरिश्ता बन सकेंगे। योग नहीं लगता तो चेक करो - जरूर कोई छिपा हुआ विकर्म अपने तरफ खींचता है। ब्राह्मण आत्मा और योग नहीं लगे, यह हो नहीं सकता। ब्राह्मण माना ही एक के है, एक ही हैं। तो कहाँ जायेंगे? कुछ है ही नहीं तो कहाँ जायेंगे?

सिर्फ ब्रह्मचर्य नहीं लेकिन और भी काम विकार के बाल बच्चे हैं। बापदादा को एक बात पर बहुत आश्चर्य लगता है - ब्राह्मण कहता है, ब्राह्मण आत्मा पर व्यर्थ वा विकारी दृष्टि, वृत्ति जाती है। यह कुल कलंकित की बात है। कहना बहनजी वा भाईजी और करना क्या है! लौकिक बहन पर भी अगर कोई बुरी दृष्टि जाए, संकल्प भी आये तो उसे कुल कलंकित कहा जाता है। तो यहाँ क्या कहेंगे? एक जन्म के नहीं लेकिन जन्म-जन्म का कलंक लगाने वाले। राज्य भाग्य को लात मारने वाले। ऐसे पदमगुणा विकर्म कभी नहीं करना। यह विकर्म नहीं, महा विकर्म है। इसलिए सोचो, समझो, सम्भालो। यही पाप जमदूतों की तरह चिपक जायेंगे। अभी भले समझते हैं बहुत मजे में रह रहे हैं। कौन देखता है, कौन जानता है लेकिन पाप पर पाप चढ़ता जाता है और यही पाप खाने को आयेंगे। बापदादा जानते हैं कि इसकी रिजल्ट कितनी कड़ी है। जैसे शरीर से कोई तड़प-तड़प कर शरीर छोड़ता वैसे बुद्धि पापों में तड़प-तड़पकर शरीर छोड़ेगी। सदा सामने यह पाप के जमदूत रहते हैं। इतना कड़ा अंत है। इसलिए वर्तमान में गलती से भी ऐसा पाप नहीं करना। बापदादा सिर्फ सम्मुख बैठे हुए बच्चों को नहीं कह रहे हैं लेकिन चारों ओर





के बच्चों को समर्थ बना रहे हैं। खबरदार, होशियार बना रहे हैं। समझा - अभी तक इस बात में कमजोरी काफी है।

17/10/25

**(12.04.1984)**

### 7.6 आज्ञाकारी रहने का दृढ़ संकल्प करो :

Definition of

ब्रह्मा बाप के हर कदम पर कदम रखना इसको कहा जाता है फालो फादर। तो ब्रह्मा बाप ने बाप की श्रीमत पर पहला कदम क्या उठाया? पहला क़दम आज्ञाकारी बने। जो आज्ञा मिली उसी आज्ञा को प्रत्यक्ष स्वरूप में लाया। तो **चेक करो कि आज्ञाकारी के पहले क़दम में फालो फादर हैं? अमृतवेले से लेकर रात तक मनसा, वाचा, कर्मणा, सम्बन्ध, सम्पर्क में जो आज्ञा मिली हुई है उसी आज्ञा प्रमाण चलते हैं?** कि कोई आज्ञा पालन होती है और कोई नहीं होती है? संकल्प भी आज्ञा प्रमाण है कि मिक्स है? अगर मिक्स है तो फुल आज्ञाकारी हैं या अधूरे आज्ञाकारी? हर समय के संकल्प की आज्ञा स्पष्ट मिली हुई है। अमृतवेले क्या संकल्प करना है — ये भी स्पष्ट है ना! तो **फालो करते हो कि कभी परमधाम में चले जाते हो और कभी निद्रालोक में चले जाते हो?** हर कर्म में, हर समय कदम पर ही कदम है? बाप का कदम एक और बच्चे का कदम दूसरा हो, तो उसे आज्ञाकारी नहीं कहेंगे ना! चाहे परमार्थ में, चाहे व्यवहार में, दोनों में जो जैसी आज्ञा है वैसे आज्ञा को पालन करना — इसकी परसेन्टेज चेक करो। चेक करना आता है? तो पहला कदम आज्ञाकारी बनो, आज्ञाकारी को सदा बाप की दुआयें स्वत: मिलती हैं और साथ-साथ ब्राह्मण परिवार की भी दुआयें हैं। तो चेक करो कि जो भी संकल्प किया, चाहे स्व के प्रति, चाहे सेवा के प्रति, चाहे स्थूल कर्म के प्रति या अन्य आत्माओं के प्रति उसमें सबकी दुआयें मिलीं? क्योंकि आज्ञाकारी बनने से सर्व की दुआयें मिलती हैं और यदि दुआयें मिल रही हैं तो उसकी निशानी है कि दुआओं के प्रभाव से दिल सदा सन्तुष्ट रहेगा, मन सन्तुष्ट रहेगा।

पुछो अपने आप से...

समझा?
Result

Check to CHANGE

17/10/25